ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

राजनीति प्रक्रिया में महिलाओं की दशा एवं दिशा

सुषमा चौरे
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शास.रा.सु.मु.दे.महाविद्यालय
छुरिया, राजनांदगाँव,
छत्तीसगढ़

सारांश

दुनिया के लगभग अधिकांश देशों में शताब्दियों से बालिकाएँ, किशोरियाँ, युवतियाँ प्रौढ़ाएँ केवल इस आधार पर भेदभाव का शिकार होती आयी है कि वे महिला है। महिला उत्पीड़न अधिकांशत : व्यापक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संरचना का हिस्सा है, जो महिलाओं को ऐसे उत्पीड़न का हिस्सा बना देता है जिसके लिए सिर्फ राजनीति कारकों या राज्य को ही दोषी नही माना जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षो से महिलाओ के उत्थान हेतु ''कल्याण और विकास'' कार्यक्रमों में बजाय ''सशक्तिकरण'' पर जोर दिया जाने लगा है। सशक्तिकरण से अभिप्राय है– अधिकार, सामर्थ्य और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता ।

मुख्य शब्द : मंत्रिपरिषद, महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रक्रिया।

प्रस्तावना

राजनीति प्रक्रियामें महिलाओं की भागीदारी से तात्पर्य है– प्रमुख राजनीति पदो पर महिलाओं को आनुपातिक दृष्टि से चुना जाना, विधायिका मे महिलाओं का उनकी संख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व होना, मंत्रिपरिषद जैसे नीति निर्माण निकायो में महिलाओं का समुचित प्रतिनिधित्व ।

इस तथ्य से इंकार नही किया जा सकता कि, किसी भी अविकसिक अथवा पिछडे समूह को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने, उसे आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में विकसित वर्गो के समकक्ष लाने मे राजनीति निर्णय प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है। यदि ऐसे वर्गो की राजनीति मे समान रूप से भागीदारी सुनिश्चित कर दी जाये तो निश्चित रूप से विभिन्न क्षेत्रों में उन्हे अपने उन्नयन के अच्छे अवसर प्राप्त हो सकेगें । इस दृष्टि से सभी देशो में महिलाओं की राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास किये जा रहे है।

राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की सक्रिय भूमिका उनमें स्वावलम्बन की भावना पैदा करती है। इसी दृष्टि सें 18 दिसम्बर 1976 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने ''महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के भेदभाव की समाप्ति पर अभिसमय'' को सर्व सम्मति से स्वीकार किया। अभिसमय के अनुसार सभी राष्ट्र देश की राजनिति में महिलाओं को पुरूषो के समान अधिकार देंगे कहा।

1. चुनाव एवं जनमत संग्रह में मत देने तथा विधायिकाओं और अन्य सार्वजनिक निकायों में चुने जाने का अधिकार हो,
2. सरकारी नीतियों के निर्माण एवं उनके कार्यान्वयन मे सहभागिता तथा सरकार मे सभी स्तर के पदो को धारण करने का अधिकार हो,
3. देश के राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में सक्रिय गैर सरकारी संगठनो और संघो में संक्रिय रूप से भाग लेने का अधिकार हो,

राजनीतिक प्रक्रियामें महिला भागीदारी –बाधक तत्व

राजनीतिक प्रक्रियामें महिला भागीदारी के मार्ग में बाधक तत्व विद्यमान है। ये बाधक तत्व एक नही वरन् अनेक है तथा इनमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञनिक सभी प्रकार के तत्व है। विभिन्न बाधक तत्वो की एक संक्षिप्त विवेचना इस प्रकार है।

राजनीतिक तत्व

राजनीतिक क्षेत्र में अनेक ऐसे कारक है जो महिलाओं की भागीदारी को बाधित करते हैं। लगभग सभी देशो की राजनीति ''पुरूष वाली और पुरूषों की कार्य शैली '' (Male Dominated & Masculine Style Politics) पर है, तथा उसमें महिलाओं की परिस्थितियॉ और सुविधाओं पर ध्यान नही दिया गया है। संसदीय बहसों कें लम्बे घंटे तथा उसके उपरांत संसदीय समितियों कार्य, दलीय कार्य और निर्वाचन क्षेत्र से जुडें विभिन्न कार्य तथा इन कार्यो से जुडी विभिन्न यात्राएँ यह सब कुछ इतना अधिक हो जाता है कि महिलाएँ–पत्नी, माँ और दादी भूमिका निभाने या गृहस्थी से जुडे समस्त कार्यो के साथ इनका तालमेल नही बिठा पाती । महिला को राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व पारिवारिक सदस्यों से अनुमति लेनी होती है, जो सामान्यता एक सरल कार्य नही है।

नडिधा श्वेदोवा ने अपने एक लेख में इन कठिनाइयो का उल्लेख इस प्रकार किया है–'' किसी महिला के लिए राजनीति मे प्रवेश करने का विचार बना पाना बहुत अधिक कठिन है। एक बार वह अपना विचार बना ले, तब उसे इस संबंध में अपने पति, बच्चों और परिवार को तैयार करना होता है। जब वह इन सब कठिनाइयों को पार कर दल के टिकट के लिये आवेदन करें, तब पुरूष प्रतियोगी जिसके विरूद्व उसे चुनाव लडना है, उसके संबंध में कई तरह की कहानियॉ प्रचारित–प्रसारित करता है। इस सबके बाद जब उसका नाम दलीय नेताओं के सामने जाता है,तब वे उसे इस कारण उम्मीदवारी से वंचित कर देते हैं कि उन्हे सीट खो देने का डर रहता है। ''अधिकांश अंशो मे हम आज भी पुरूष प्रधान समाज में रह रहे हैं। और पुरूष प्रधान समाज के राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओ की भागीदारी कम हो यह नितांत स्वाभाविक है।

सामाजिक – आर्थिक तत्व

राजनीति महिलाओ का कार्य श्रेत्र नही है, सदियो से चला आ रहा यह विचार अब भी अनेक अंशो में बना हुआ है। परिणामतः महिलाएँ राजनीति की ओर उन्मुख नही होती और इस ओर उन्मुख होती हैं तो उन्हे विधिक प्रकार से हतोत्साहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त विश्व के अधिकांश देशो की राजनीति में धन की शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई है। उम्मीद्वारो को दल की ओर से बहुत थोडे ही वित्तीय साधन दिये जाते हैं। शेष वित्तीय साधन तो उम्मीदवारो को स्वयं ही जुटाने होते हैं। विविध क्षेत्रों से वित्तीय साधन जुटा लेने का कार्य पुरूष की तुलना में महिलायें ठीक प्रकार से नही कर पाती। यह बात उन्हें नुकसान की स्थिति में पहुँचा देती हैं। इन सबके अतिक्ति अधिकांश देशों में राजनीति बहुत भद्दा और विभिन्न दुष्टताओं से भरा खेल बन गया है। जैसे व्यक्तिगत लांछन, दुष्प्रचार, छलयोजित प्रसार, राजनीतिक जोड़–तोड, बल प्रयोग और फर्जी मतदान, चुनाव में विजय प्राप्त करने के गुर बन गये है। पुरूष इन सभी कार्यो में महिलाओं की शालीनता उन्हे इन कार्यो सें विमुख करती है और वे नुकसान में रहती हैं।

राजनीतिक शिक्षा और सम्पर्क सुविधाओं में महिलाओं का पिछडापन

शिक्षा, राजनीति के संरचनात्मक तत्व का कार्य करती है और लगभग सभी देशों में महिलाये शिक्षा के संबंध में पुरूषों से बहुत पीछे हैं। राजनीतिक शिक्षण, प्रशिक्षण में तो वे पुरूषों से बहुत पीछे हैं। परिणामस्वरूप वे चुनाव लडने का विचार नही कर पाती। यदि पाती हैं तो तो वे सफल नही हो पाती । मजदूर संघो, व्यवसायिक संधो और अन्य दबाव समूहों से महिलाओं के नाम को आगे बढ़ाने की ओर प्रवृत्त नही होते। एक सोचनीय तथ्य यह है कि महिला संगठन भी सामान्यतया इस बात में रूचि नही लेते कि चुनावों में महिलाओं की उम्मीदवारी अधिक हो और जो महिला उम्मीदवार है, वे चुनाव में विजयी हो।

मनोवैज्ञानिक तत्व

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी में मनोवैज्ञनिक तत्वो का भी योग है। राजनीति उनका कार्यक्षेत्र हो सकता है और वे चुनाव मे विजयी हो सकती है। इस बात के संबंध में सामान्यतया उनमे आत्मविश्वास का अभाव देखा गया है। अतः वे राजनीति की ओर उन्मुख नही होती। ''राजनीति एक गन्दा खेल है'' यह बात बहुप्रचारित है और बहुत कुछ अंशो मे सत्य भी है। स्वाभाविक रूप से महिलाएं राजनीति में भाग लने की बात सरलता से नही सोच पाती।

जनसंचार साधनों (Medi) की भूमिका

महिलाओं की कम भागीदारी के लिये समाचार पत्र और टेलीविजन आदि जनसंचार के साधन अपनी लोकप्रियता बढ़ाने और अपने व्यवसायिक हितों के कारण नारी की देह उसके सौंदर्य और आकर्षण को ही केंद्र बिन्दु बनाये हुए हैं। इस बात को भुला दिया गया हैं कि नारी न केवल आकर्षक शरीर वरन ज्ञान और समझ से परिपूर्ण मस्तिष्क और रचनात्मकता की धनी हैं।

कुछ अन्य तत्व भी हैं, साधारण बहुमत की पद्धति भी राजनीति में नारी की कम भागीदारी के लिए उत्तरदायी बताई जाती है। प्रमुख कारण तो स्वयं पुरूष और समाज के एक वर्ग की पुरूषवादी सोच और निहिता स्वार्थ ही हैं। विडम्बना यह हैं कि स्वयं नारी जाति का एक वर्ग पुरूषवादी सोच से ग्रस्त हैं।

राजनीति में महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिये सुझाव

महिलाओं का राजनीतिकरण

महिलाओं का राजनीतिकरण महिला भागीदारी को बढ़ाने का निश्चित उपाय हैं। महिलाओं का राजनीतिकरण एक व्यापक धारणा हैं और इसके अंतर्गत अनेक बातें आती हैं। जैसे सूचना विचार और ज्ञान राजनीति का संरचनात्मक ढांचा हैं। अतः महिलाओं की सर्वांगीण जीवन और राजनीति के संबंध में अधिकाधिक जानकारी देने, उनके विचार और ज्ञान को आगे बढ़ाने और राजनीति के प्रति उनमें अधिक से अधिक रूचि पैदा करने की प्रत्येक संभव चेष्टा की जानी चाहिये।

महिलाओं को अपनी समस्याओं, सामाजिक समस्याओं जीवन और प्रश्नों पर बातचीत के लिये अधिकाधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। महिलाओं में आत्मविष्वास जागृत किया जाना चाहिए तथा इन्हें इस बात के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए कि ''यदि राजनीति एक गंदा खेल हैं'' तो इस खेल की गन्दगी को कम करने और इसमें ताजगी लाने के लिये इसमें प्रवेश करना चाहिये।

महिला संगठित हो, विशेषतया राजनीतिक रूप में संगठित हो

राजनीति दलो के अन्दर और बाहर महिलाओं को संगठित होना चाहिये। महिलएँ अधिक से अधिक संख्या में अपनी पसंद के राजनीति दल की सदस्यता प्राप्त करें और दल में स्वयं को प्रभावी बनाये। अधिकांष राजनीतिक दलो के नेतृत्व पद पर पुरूष आसीन हैं। उम्मीदवारो के चयन में उनके अपने लिंग आधारित पूर्वाग्रह होते हैं। इन पूर्वाग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिये महिलाओं को इस बात पर जोर देना चाहिये कि उम्मदीवारों के चयन के लिये स्पष्ट नियम हो तथा नेतृत्व के प्रति निश्ठा के बजाय दल के प्रति निष्ठा को अधिक महत्व दिया जावे। जब राजनीतिक खेल के नियम स्पश्ट होंगे तो अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिये महिलाएँ रणनीति विकसित कर सकती हैं। प्रत्येक राजनीतिक दल की महिला शखाको अधिक सशक्त बनाने के प्रयत्न किये जाने चाहिये। महिला शाखा सशक्त हो और अपने लिये अधिक प्रतिनिधित्व की मांग करे।

गैर सरकारी संगठनों, विषेशतया महिला संगठनों की भूमिका

राजनीति अपेक्षाकृत विशुद्धता और रचनात्मकता की दिशा में आगे बढे, इस दृष्टि से गैर सरकारी संगठनों के द्वारा राजनीति में महिलाओं की अधिक भागीदारी पर बल दिया जाना चाहिये। इस प्रसंग में सभी महिला संगठनों की जागरूकता और सक्रियता को बढ़ाते हुए राजनीतिक दलो पर इस बात के लिये दबाव डाला जाना चाहिये कि, वे अपने संगठनात्मक ढांचे में महिलाओं को प्रभावशाली भागीदारी दे और अधिक संख्या में उन्हें उम्मीदवार बनाये। ''महिला का वोट महिला के लिये'' यह स्थिति तो संभव और उचित नहीं हैं लेकिन जब कभी चुनाव मैदान में समान योग्यता वाले उम्मीदवार हो, तब महिला उम्मीदवार के पक्ष को पूरी षक्ति के साथ मजबूत किया जाना चाहिए।

महिला उन्मुख करने की चेष्टा

महिलाओं की मजदूर संघो और अन्य सभी दबाव समूहों मे अपनी भागीदारी बढ़ानी चाहिये। दबाव समूहों को ''महिला उन्मुख'' करने की चेष्टा की जानी चाहिये।

राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय महिलाओं और महिला संगठनों की स्थिति

जीवन के सभी क्षेत्रों में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं तथा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। राजनितिक क्षेत्र में सक्रिय महिला संगठनों के द्वारा जन संचार माध्यमों के साथ मित्रता की स्थिति बनायी जानी चाहिये। मीडिया नारी सौंदर्य को सामने लाने के साथ–साथ उसकी तेजस्विता, उर्जा, षक्ति और रचनात्मकता को भी पूरी कलात्मकता के साथ सामने लाये। जो महिलाएँ राजनीति में हैं वे अपना कार्य उचित रूप में कर सके और अन्य महिलाएँ राजनीति में आने के लिये प्रोत्साहित हो। इसके लिये आवश्यक है कि पुरूष वर्ग की समस्त सोच में परिवर्तन हो और गृहस्थी के कार्य में पुरूष महिलाओं के साथ भागीदारी करे।

राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागीता कैसे बढ़े?

लिंग भेद एक सार्वभौमिक स्थिति हैं। निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे महिलाओं को अपेक्षाकृत निरन्तर स्थान दिया जाता हैं। सहभागिता के दो आयाम हैं– परिणाम परक (Qualification) और गुणपरक (Qualification) कभी–कभी सहभागिता के परिणाम परक आयम पर ही ध्यान दिया जाता हैं। उदाहरण के लिये महिलाएँ हैं तो समग्र जनसंख्या का आधा भाग, परन्तु निणर्य निर्माण के स्तर पर उनकी भूमिका अत्यंत न्यूनतम होती हैं। इसे तुरन्त परिवर्तित किये जाने की आवश्यकता हैं। सहभागिता का स्तर परक न होकर गुण परक होना चाहिए।

विकास प्रक्रिया (Development) मे भी महिलाओं की सहभागिता बढ़ायी जानी चाहिए। महिलाओ के शिक्षा के अवसरों मे बढ़ोत्तरी, उनके उन कार्यो को अपेक्षाकृत मान्यता जो वे बिना किसी पारिश्रमिक के करती हैं, चुनावी राजनिति मे बेहतर प्रतिनिधित्व उनके अधिकारों की रक्षा ले लिये बेहतर वैधानिक और राजनीतिक उपाय और निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे उनकी भूमिका कही अधिक सशक्त हो सकती हैं।

निष्कर्ष

महिलाओं के शासन मे सहभागिता के सन्दर्भ मे अर्थात राजनीति प्रक्रिया मे सहभागिता के सन्दर्भ मे निष्कर्श स्वरूप यह कहा जा सकता हैं की सही मायने मे लोकतत्रं तभी हो सकता हैं, जब शासन और विकास कार्यक्रम दोनों मे ही महिलाओं की सहभागिता हो। स्त्री और पुरूष दोनो की सहभागिता के बिना विकास कार्यक्रम के अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं।

शासन मे महिलाओं की सहभागिता ही यह सुनिश्चित कर सकती हैं की, समाज को अपने सदस्यों की प्रतिभा का पूरा लाभ मिल रहा हैं। हालही के वर्षो में भारत जैसे देशो मे महिलाएँ राजनीतिक संस्थाओ और नौकरियों मे आरक्षण की मांग करती हैं और स्थानीय स्वशासन की संस्थाओ मे महिलाओं को पहले ही 33 प्रतिषत आरक्षण दिया जा चुका हैं।

समस्त व्यवस्था और राजव्यवस्था में महिला अपने लिये समानता और न्यायपूर्ण स्थान अवश्य प्राप्त कर लेगी। इस दिशा में यात्रा प्रारंभ हो गयी है। लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त होगा, यात्रा की गति को बढ़ाने की आवश्यकता है। महिला जागृति और शक्तिशाली राजनीतिक प्रतिबद्धता यात्रा की गति को बढ़ाने में सहायक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राजनीति विज्ञान–डॉ.पुखराज जैन*
2. *राजनीति विज्ञान– नन्दलाल*
3. *राजनीति विज्ञान – डॉ.बी.एल.फडिया*